RESEARCH SCHOLAR

Vol. I No. IIA December 2011

ISSN 2249-6696

Refereed Interdisciplinary Research Journal
(Published Quarterly in September, December, March and June)

Pritned and Published by

Scholars Association of Kerala
Ruby Villa, Kozha P. O.,
Kottayam Dist. Kerala - 686640
e.mail: thomaschennanchira@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

मंजुल भगत की कहानियों में अभिव्यक्त नारी अस्मिता

Dr. Santy Joseph
Asst. Professor, Dept. of Hindi,
St. Aloysius College, Edathua, Alappuzha.

अपने परिवेश की विद्रूपताओं और क्रूरताओं को यथातथ्य चित्रित करनेवाली विख्यात कहानीकार है मंजुल भगत। मंजुल भगत का जन्म २२ जून १९३६ को मेरट में हुआ। उनके महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है 'बूँद', 'गुलमोहर के गुच्छे', 'आत्महत्या से पहले', 'कितने छोटा सफर', 'बावन पत्ते' और 'एक जोकर सफेद कौआ' और दूत द मर्च एन्ड स्टोरीज़ और 'अंतिम बयान'। उनके पात्र स्थितियों से जूझने में सक्षम है। 'सामाजिक विसंगतियों', विषमताओं और विद्रूपताओं की तीखी अभिव्यक्ति मंजुल भगत के लेखन की विशिष्ठ पहचान है। लेकिन उनकी अभिव्यक्ति में अनावश्यक आक्रोश नहीं है। मानवीय गुणों की अभिव्यक्ति में वे उतनी ही समर्थ है। इनकी हर कहानी एक मुकम्मिल बयान होती है।"[१] आधुनिक विचारधारा से ओतप्रोत नारी उनकी रचनाओं में काफी संख्या में देखने को मिलती हैं। भारतीय नारी के आत्मबल और साहस की ओर उन्होंने संकेत किया है। उन्हीं के शब्दों में "एक ओर बात है नारी द्वारा संपूर्ण विद्रोह मैं नहीं दिखला पाती क्योंकि मैं विद्रोह को कोई पलायन मार्ग नहीं मानती विद्रोह व्यक्ति से नहीं परिस्थितियों से होता है। जिनका हटंकर सामना करना और उनमें परिवर्तन या पाना ही सच्चा विद्रोह है। इसलिए मेरी भी कोई नायिका पति और धर को छोडकर नहीं जाती। यह उसकी कायरता नहीं सामना करने और टकराकर टिके रहने की क्षमता है।"[२] मंजुल भगत के शब्दों में "एक भारतीय नारी के गहरे संस्कार इनमें हैं। भारत की संस्कृति अस्तित्वबोध एवं स्त्री-स्वातंत्र्य की चेतना आपकी रचनाओं में प्रचुर मात्रा में मिलती है।"[३] मंजुल भगत की कुछ प्रमुख कहानियों के आलोक में वर्तमान यूग में नारी अस्मिता पर प्रकाश डालने का प्रयास यहाँ किया जाता है।

भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज है। सत्तरोत्तर काल में नारी सामाजिक बन्धनों को तोड़कर बाहर आयी है। शैक्षिक आर्थिक और वैचारिक दृष्टि से वह सजग हुई है। इससे नारी संबन्धी परंपरागत मान्यताएँ बदल रही हैं। आज नर और नारी दोनों समान धरातल पर शिक्षा ग्रहण करते है और सामाजिक क्षेत्रों में कार्य करते हैं। शिक्षा पाने पर आधुनिक युवतियाँ पुरानी मान्यताओं और परंपराओं को नकारने के लिए सशक्त वन जाती है। इतना ही नहीं; अपनी ही स्वतंत्र पहचान बनाना बी चाहती है।

मंजुल भगत द्वारा लिखित 'निशा' में निशा के रूप में एक सशक्त चरित्र की सृष्टि कहानीकार ने की है। पांच बहिनों के परिवार में निशा चौथे नंबर का है। चौथी बेटी होने के कारण उसे ज्यादा लाड़ प्यार नहीं मिला। स्वयं को वह खुशकिस्मत समझती है। शादी करवाने के लिए मेहमानों के सामने पाँच लड़कियों की प्रदर्शिनी निशा को अच्छा नहीं लगा। बी.ए के बाद निशा के लिए भी पिताजी जोर-शोर से वर ढूँटने लगे। व्यक्तित्व के विकास और जात्यनिर्भरता के लिए शिक्षित होना अति आवश्यक है। यह पहचानकर निशा आगे पढ़ना चाहती है। तब निशा कहती है कि "शादि-वादी मुझे अभी नहीं करनी चाहे पिताजी मुझे जिन्दा ही क्यों न चुनवा दें"।[४] सफलता की उच्चतर सीढियाँ चढ़ने को वह आतुर है, दूसरे पर निर्भर रहना

Scanned with OKEN Scanner

वह पसंद नहीं करती है और अपना जीवन अपनी मर्जी के अनुसार जीना चाहती है। एम.ए. के बाद पी.एच.डी. के स्कॉलरशिप पर वह घर छोडकर अमरीका जाती है और पी.ए.डी. करते-करते एक नौकरी भी ले लेती है। निशा के 'क्वालिफिकेशन्स' के साथ सुयोग्य वर ढूँढने में कठिनाई होगा इसलिए पिताजी ने कई बार निशा को लौट आने को कहा, लेकिन वह तैयार नहीं है। इतने में परिवार के अन्य बहनों की नावें शादी के बाद तुफान में दिशा खोजती है।

थीसिस सबमिट कर वापस लौटने की तैयरियाँ करते समय पिताजी की मृत्यु की खबर उसे मिलती है और वह जल्दी ही घर लौट आती है। गृह-नाटक के निर्देशक-निर्माता के गायब हो जाने के बाद घर का खालीपन और माँ का बेबसी रूप देककर उसे बहुत दुख होता है। वह इस घर का अभिभावक बनने का निर्णय लेती है और अपनी बहनों के लिए पीहर को बनाए रखना चाहती है। निशा माँ से कहती है कि "तुम यहां ही रहोगी। मेरे पास। मुझे हॉल में तालियों की गड़गड़ाहट नहीं चाहिए। कोई दर्शक-प्रशंसक नहीं चाहिए। तुम चली जाओगी माँ, तो दीपा और गुड्डी के लिए भी कोई पीहर नहीं रह जाएगा।"[५] माँ निशा को ही अपना अभिबावक मानती है और उसे बुढापे का आसरा मानकर उसके पास ही रहने का निर्णय भी लेती है।

भारतीय समाज में पुत्र ही परिवार का उत्तरदायित्व निभाता है और लोग बेटे को ही श्रेष्ठ और बूढापे का सहारा मानते हैं। निशा की मां को बेटे की कभी थी। इस कभी को निशा बेटी होकर भी पूर्ण करती है। वह शिक्षा प्राप्त कर, आत्म निर्भर बनकर, आत्मसम्मान की जिन्दगी बिताती है। वह अपने आत्मबल और कार्य के आधार पर स्त्री की प्रतिष्ठा के लिए जागृत भी है।

साधारणतः मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास पारिवारिक परिवेश के अनुरूप ही होता है। नारी को जीवन में अनेक समस्याओं का मूकाबला करना पड़ता है। जब पारिवारिक समस्याओं से जूझना पड़ता है तब वह पति से शारीरिक और मानसिक सहायता चाहती है। पति के साथ अच्छा संबन्ध न होने पर उसको यातनाओं की शिकार होना भी पड़ता है। संतुलित और परंपरागत जीवन जीना चाहनेवाली पत्नी भी ऐसे अवसर पर विद्रोही बन जाती है।

'नागपाश' मंजुल भगत की श्रेष्ठ कहानी है। नायिका शिवानी कॉलेज में अध्ययन के समय अपनी ही कक्षा की अति मॉडर्न युवक प्रशांत से प्रेम करती है। माँ-बाप और प्रिय मित्र भी इसका घोर विरोध करते हैं। पर अम्त में वह प्रशांत से विवाह कर लेती है। विवाह के बाद उसे पति प्रशांत के चरित्र का खोखलापन समझ में आता है। प्रशांत शाराबी बन चुका है पत्नी को गाली देता है और उसे मारना भी उसका स्वभाव बन चुका है। सामान्य भारतीय नारी की तरह शिवानी भी मान-मर्यादा के नाम पर पति द्वारा की गयी हर पीडा को चुप-चाप सहन करती है। शादी के तीन मालों के बाद शिबानी को लगता है कि आज विवाह की वार्षिकी नहीं मौत की शोक मनाना चाहिए।

जब नारी पत्नी बनती है तब उसकी कल्पना, इच्छा, स्वप्न, भावनायें पुरुष से संबन्ध होती है। जब वह माँ बनती है तब उसकी सारी कल्पनायें बच्चा एवं उसके भविष्य पर केन्द्रित होती है। शिवानी माँ बननेवाली है। लेकिन इस पर उसे खुशी नहीं है। बच्चा के भविष्य पर चिन्ता करती है तो शिशु के कल्याम और सुरक्षा का भय उसे सताता है। जीवन की त्रासदी से वह इतनी ही दुखी है कि वह स्वयं ही अपने गर्भपात का निर्णय लेती है। गर्भपात में ही बच्चे की और अपनी ही मुक्ती देखती है। "उसे जन्म से पहले ही उस नागपाश से मुक्त कर दिया, जिससे वह स्वयं जकड़ी हुई थी।"[६]

सामान्यतः कोई स्त्री अपनी संतान को समाप्त नहीं करती है। लेकिन शिवानी शिक्षित महिला है और आधुनिक विचारों पर आस्था रखनेवाली है। रूढी और परंपरा को तोड़ने की क्षमता उसी में है। वह अपनी ही अस्मिता को

Scanned with OKEN Scanner

पहचाननेवाली है। इसलिए गर्भपात धार्मिक और परंपरागत नैतिकता को नकारनेवाले होने पर भी वह स्वयं निर्णय लेकर अजन्मे शिशु और अपने लिए मुक्ति की नई राह ढूँढती है। इसप्रकार शिवानी अस्मिता की तलाश मे छतपटाती भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है। परंपरागत नैतिक मूल्यों की तुलना में अस्मिता को अधिक महत्व देनेवाली शिक्षित एवं चिंतनशील नारी के रूप में वह सामने आती है।

'नालायक बहू'

विवाहित नारी का जीवन पुरुष पर ही आश्रित है। किसी भी परिस्थिति में नारी अपनी जिन्दगी को पति से अलग नहीं कर पाती है। कभी-कभी ससुरालवाले उसे कोसती है, शारीरिक और मानसिक पीड़ायें देती हैं। ऐसी स्थिति में भी वह पति के प्रति निष्टावान रहती है। इसके अलावा वह प्रेम, त्याग, सेवा आदि भावनाओं को वैवाहिक जीवन में महत्व देती है।

मंजुल भगत की कहानी 'नालायक बहू' की कामिनी अपने घर, परिवार और सामाजिक मर्यादा केलिए हर प्रकार का कष्ट भोगती है और त्याग करती है। छुट्टी के दिनों में ननद सुजाता जीजी आती है। उसे देखकर अम्मा भागकर आती है और कामिनी से बच्चों को खाना देने का आदेश देती है। सुजाता के पति मेहनतकश सज्जन पुरुष थे, मितभाषी और हर व्यक्ति को यथोचित मान देनेवाले भी। लेकिन सुजाता उसे मान का पात्र नहीं मानती।

कामिनी के पति शेखर की नौकरी छूट जाती है। उन दिनों में सास और ननद उसे अधिक परेशान करती हैं। लेकिन कामिनी पति की मर्यादा और अस्तित्व की रक्षा केलिए सब कुछ चुपचाप सहकर जीवन बिताती है। दीवाली के दिन में सब कुछ भूलकर कामिनी सजने की ठानी देखकर अम्मा और ननद चौंक जाती हैं और परिहास करती हैं। कामिनी का मन टप से बुझ गया। बोली, "जीजी आज त्योहार के दिन गृहलक्ष्मी ही यदि मनहूस सूरत बनाये फिरे तो फिर जीवन में शुभ हो ही क्या सकता है? और फिर नौकरी छूटी है, जीवन तो शेष ही है।"[७] इसप्रकार प्रतिकूल परिस्थिति में भी वह धैर्य और साहस का परिचय देती है।

कामिनी का पति शेखर बेकार हो जाने से सास दूसरे बेटे के पास जाने का निर्णय लेती है। तब कामिनी का अन्तस्तल कचोटने लगता है। वह सोचने लगी कि "तुम मां हो न! इसी से एक बेटे की शेखी न बधार पाने पर दूसरे की बखान सकती हो। मैं पत्नी हूँ न, और पति तो दा-चार होते नहीं, इसी से िकलौते पति की कमियों को लेकर भी जीने का प्रयत्न कर रही हूँ।"[८] यही है मां और पत्नी की प्रतिबद्धता का अंतर। दस रोज़ बाद अम्मा कानपूर चली गयीं। कामिनी ने पीतल के सजावटी खिलौने बेचकर रसोई का कार्य संभाला। शेखर इधर-उधर से कुछ रुपए उधार लेकर लाया है। एक बार मायके से पिताजी, बेटी और दामाद को देखने केलिए आया। कामिनी ने सभी बातें छिपाने की कोशिश की। जाते समय पिताजी कामिनी को एकदम चार सौ रुपए दोने लगे। अभिमानी कामिनी इतने बड़े रकम स्वीकार करने केलिए तैयार नहीं है। कुछ दिनों के बाद अम्मा और पिताजी का खत मिला। अम्मा के खत में घर किराये पर देने की बात है तो पिताजी के खत में कामिनी को एक नौकरी मिलने की बात है।

पिताजी द्वारा दिया गया 'बहादूर' की उपाधी ने उसमें शक्ति और आत्मविश्वास की भावना भ रदी। वह पति से अनुमती मांगती है और सास की इच्छा के विरुद्ध नौकरी करने का निर्णय लेती है और गृहस्थी संभालती है। आत्मनिर्भर बनकर वह आत्म सम्मान की जिन्दगी जीती है। कामिनी भाई के ब्याह में भाग लेने केलिए अकेले मायके जाती है। दो दिन के बाद लौटने का इरादा है। उस एकाकीपन के समय शेखर ने एक ट्रांज़िस्टर बनाकर वर्मा की दूकान पर बेचने केलिए रखते है। यह कार्य भी अम्मा को पसन्द नहीं आया। सुजाता जीजी ने अम्मा को संबोधित करके एक बार कहा था "भई

Scanned with OKEN Scanner

मेरा तो अटूट विश्वास है कि स्त्री घर की शोभा है। नारी को अपना व्यक्तित्व पूर्णतया पति की छाया से एकाकार कर देना चाहिए। एवरी ग्रेट मैन हैज़ ए वुमन बिहाइन्ड हिम।" कामिनी और शेखर भी इस संवाद के समय जीजी के दरबार में थे। कामिनी बोली, "पर जीजी, ऐसा करने पर क्या समाज का एक अंग सदा पंगु, सदा अबला नहीं रह जायेगा?"

"अरे, तो घर में इतना कुछ है करने को?"

"घर का नियमित काम दो-चार घण्डों में समाप्त हो ही जाना चाहिए" कामिनी फिर बोली। तभी अम्मा कह उठी, "अब शेखर कोई बेकार थोड़े ही है। तू किसे दिखाने को काम कर रही है? घर में क्या खाने को नहीं है? दुनिया क्या कहेगी?"

"अम्मा, घर में यदि खाने को न हो तो दुनिया तो आकर खिला नहीं जायेगी? मेरे काम करने या न करने से दुनिया को मतलब?"[९] यह कहकर वह कमरे से खिसक गयी। कामिनी तो घर को संभालने केलिए दोहरा दायित्व बहन करती है। लेकिन ससुरालवालों को यह पसंद नहीं है। अम्मा और जीजी की बातों से यह स्पष्ट होता है। अपनी अस्मिता को चोट पहूँचने पर भी कामिनी पीछे नहीं हटती। सास की इच्छा के विरुद्ध नौकरी करने का निर्णय लेकर गृहस्थी संभालती है।

कामिनी के ससुरालवाले वह माता न बनने से असंतुष्ट हो जाते हैं। कामिनी तो पूर्णतया त्रुटिहीन है लेकिन पति शेखर पिता बनने में अक्षम है। लेकिन कामिनी अक्षम पति को त्यागने केलिए तैयार नहीं है। पति के मन को संतुलित रखने केलिए संतान की कभी को पूर्न करने का अलग और आदर्श तरीका वह अपनाती है। वह एक अनाथालय के बच्चे को गोद लेती है क्योंकि अनाथ बच्चे को घर, मां, बाप, सुरक्षा, शिक्षा, आदि की कमी है। अपने देवर के बच्चे को गोद न लेने के कारण वह सास की दृष्टि में नालायक बहू बन गयी है।

कामिनी स्वाभिमानी और परिपूर्ण व्यक्तित्व की धनी है। वह परंपरागत जीवन जीते हुए भी रुढ़ियों और रीति-रिवाज़ों पर प्रहार करती है। परंपरागत नारी के समान वह आंसु बहाकर निश्चेष्ठ बैठती नहीं। वह परिस्थितियों का सामना करके पति और घर की रक्षा करती है। वह अस्मिता एवं आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़कर परिवार को नई राह से संवारती है।

'खोज'

आधुनिक नारी अपने व्यक्तित्व के प्रति अधि सजग हुई है। स्त्री अगर अपनी स्वतंत्र पहचान बनाना चाहती है तो उसे स्वावलंबी होना पड़ता है। अपने व्यक्तित्व और अस्मिता की रक्षा स्त्री अपने को शिक्षित और स्वावलंबी बनाकर ही कर सकती है। परिवेश का प्रभाव व्यक्ति पर अवश्य होता है। अपने परिवेश में ही आज की नारी अस्मिता की खोज करती है।

मंजुल भगत द्वारा लिखित 'खोज' कहानी में निजी अस्तित्व की खोज करनेवाली नारी को देख सकता है। कहानी की नायिका नीलिमा शिक्षित कामकाजी तथा विवाहित है। वह धारा प्रवाह नामक समाचार पत्र के रिपोर्टर है। साधारण कामकाजी नारी की तरह वह भी घर और नौकरी को दोहरी जिम्मेदारियों से व्यस्त है। दफ्तर है घर आने पर उसे लगता है कि आफिस की मिसेज़ वर्मा नीलिमा बनकर घरेलू कामकाज निपटाती है। पति केलिए वह नीलू बनती है। वह सोचती है "कभी तो ऐसा लगता है, जैसे उसका कोई निजी अस्तित्व ही नहीं है; मिसेज़ वर्मा, नीलिमा, नीलू सब अलग-अलग नाटक में किए गए अलग-अलग 'रोल' हैं। उसके अन्दर का जो 'मैं' है, उसका 'रोल' क्या है?"[१०] दफ्तर के सहकर्मी पति माँ, वाप और घर के नौकर उसे अलग अलग व्यक्तित्व बख्श देता है। जीवन की आपाधापी में वह अपने भीतर के 'मैं'

Scanned with OKEN Scanner

को ढूँढना चाहती है। जी मैं हूँ। नीलिमा की त्रासदी यह है कि वह अपनी जिन्दगी को अपने आग्रह के अनुरूप नहीं जी पाती।

दफ्तर के काम से ऊबकर नीलिमा एक माह की 'एन्ड लीव' लेकर बंबई में माता के पास पहूंच गयी। लेकिन वहाँ उसे कोई 'चेंज' नहीं मीला। लोगों की नजरों में बडी ओहदे पर विटाजित नारी होने पर भी वह तृप्त नहीं है। अन्त में जब वह जानती है कि वह मां बननेवाली है तब उसे पूर्णता का आभाव होता है। गर्भवती नीलमा पति का सास-ससुर का माँ-बाप का और प्रिय मित्रों का वात्सल्य चाहती है। इसलिए वह पति के घर लौटती है। दिन बीतने लगे और नीलिमा एक शिशु को जन्म देती है। नवजात शिशु को देखकर वह सोचती है कि "यह है क्या वह 'मैं' पकडाई में नहीं आ रहा था। यह तो साकार रूप में मेरे सम्मुख आ प्रस्तुत हुआ है। क्या मैं इसे ही खोजती फिर रही ती।"[११]

मातृत्व की प्राप्ती स्त्री के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण अंश है। अस्मिता की खोज में बेचैन रहनेवाली नीलिमा मातृत्व को ही 'मैं' समझकर संतुष्ट होती है और उसे लगती है कि उसकी 'स्व' की तलाश पूर्ण हुई है।

उपर्युक्त कहानियों के अवलोकन के आलोक में यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि मंजुल भगत की कई कहानियों में नारी अस्मिता का चित्रण हुआ है। भारतीय नारी की अस्मिता की लडाई एक दुरभिसंधि से अग्रसर हो रही है। इस लडाई में देश की लाखों नारियां हिस्सा ले रही हैं। प्रत्यक्ष और पयेक्ष रूप से आवश्यक समर्थन देते हुए कई नारीवादी संगठन सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। भारतीय नारी की अस्मिता के लिए हिन्दी का कहानी साहित्य बहुत बड़ा योगदान दे चुका है और दे रहा है। भविष्य में भी यह अपना अमूल्य योगदान देता रहेगा, ऐसा विश्वास है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचि

१. नयी सदी की पहचानः श्रेष्ठ महिला कथाकार, संपादकः ममता कालिया, पृ. १३९

२. तिरछी बौछार, भूमिका सेः मंजुल भगत

३. संग्रथन-जनवरी २००७, पृ. २४

४. गुलमोहर के गुच्छे, मंजुल भगत, पृ. ७९

५. वही, पृ. ८२

६. वही, पृ. ६७-६८

७. वही, पृ. २९

८. वही, पृ. ३१

९. वही, पृ. ४२

१०. नौकरीपेशा नारीः कहानी के आइने में, संपादकः पुष्पलाल सिंह, पृ. ८५

११. वही, पृ. ९०

Scanned with OKEN Scanner